3

कक्षा-कक्ष में कविता

अक्षय कुमार दीक्षित *

सुरेश और अमित घर के सामने वाले पेड़ की डाल पर बैठे गप्पें मार रहे थे। दोनों कक्षा-4 में पढ़ते थे, पर अलग-अलग स्कूल में। सुरेश ने अमित से कहा, 'आज तो मेरा होमवर्क करने का बिल्कुल मन नहीं कर रहा'। अमित ने पूछा, ''क्यों? क्या हुआ?''

''आज मैडम ने एक कविता पढ़ाई थी- ''पढ़क्कू की सूझ''। मुझे तो कुछ पल्ले नहीं पड़ा। ऊपर से मैडम ने उसका भावार्थ लिखने का काम दे दिया है। मुझे तो ये भी नहीं पता भावार्थ होता क्या है'' सुरेश ने खीझते हुए कहा। अमित ने कहा, ''अरे! यह कविता तो बड़ी मज़ेदार है। परसों मेरे सर ने भी यही कविता पढ़ाई थी। हम सब तो हँस-हँस के लोटपोट हो गए थे! और हमारे सर तो कभी भावार्थ-शावार्थ लिखने के लिए नहीं कहते। बल्कि वे जो काम देते हैं, उन्हें करने में तो बहुत मज़ा आता है।'' ''चल-चल! क्यों मुझे उल्लू बना रहा है। कविता भी कहीं मज़ेदार होती है और ये कविता? ये तो सिर के ऊपर से निकल जाती है।'' सुरेश ने अमित की बात का विश्वास ही नहीं किया।

आपको क्या लगता है? ऐसा क्यों होता है कि एक ही कविता एक कक्षा में बोझ जैसी बन जाती है तो दूसरी कक्षा में वही कविता हँसने-गुदगुदाने और खेल-खेलने का साधन बन जाती है? यकीनन इस अंतर का रहस्य कविता 'पढ़ाने' के तरीके में छिपा है।

अमित के अध्यापक ने इस कविता को कक्षा में इस तरह बच्चों के सामने प्रस्तुत किया कि वह बच्चों के लिए आनंददायक और सहज हो गई। जबकि सुरेश की अध्यापिका ने शायद किसी रस्म की तरह काम निपटा भर लिया।

आप 'पढ़क्कू की सूझ' कविता एन.सी.ई.आर.टी द्वारा प्रकाशित हिंदी पाठ्यपुस्तक 'रिमझिम, भाग-4' में देख सकते हैं। इसे हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखा है। आइए, स्वयं अमित के अध्यापक

* *शिक्षा सलाहकार*, सी-633, जे.बी.टी.एस. गार्डन, छत्तरपुर एक्सटेंशन, नयी दिल्ली-110074

की ज़बानी सुनते हैं कि उन्होंने अपनी कक्षा में ''पढ़क्कू की सूझ'' कविता को किस तरह भाषायी आदान-प्रदान का माध्यम बनाया।

वातावरण निर्माण - उस रोज़ मैंने कक्षा में जाकर रोज़ की तरह बच्चों से बातचीत शुरू कर दी। बच्चे छुट्टियों के बाद स्कूल में लौटे थे। मैंने बच्चों से पूछा- छुट्टियों में क्या किया? कौन-कौन घूमने गए थे? कहाँ गए थे? किस-किससे मिले? क्या-क्या देखा? आदि।

बच्चे अपने अनुभव बहुत खुशी और उत्साह से बता रहे थे। कुछ बच्चों ने बताया, ''सर, हमने अपने नाना के साथ खेती भी की।''

''अच्छा? नाना जी हल बैलों से चलाते हैं या ट्रैक्टर से?'' ''बैल से। हमारे पास एक बैल है।'' उस बच्चे ने बताया। ''बैल और किस-किस काम आता है?'' मैंने पूछा। बच्चों ने बताया-बोझा उठाने के लिए, हल चलाने के लिए, गाड़ी खींचने के लिए, कोल्हू चलाने के लिए आदि। अब मैंने बच्चों से कोल्हू के बारे में पूछा। बच्चों को कोल्हू के बारे में ज़्यादा कुछ पता नहीं था। मैं अपने साथ कोल्हू और बैल के फोटोग्राफ लेकर गया था। मैंने वे चित्र बच्चों को दिखाए और बोर्ड पर लगा दिए। इसके बाद मैंने बच्चों से पूछा-कोल्हू में गोल-गोल घूमता बैल क्या-क्या सोचता होगा? जिस-जिस बच्चे का मैं नाम लूँगा, वह सामने आकर कोल्हू के बैल की एक्टिंग करेगा और डायलॉग बोलेगा।

मैंने तीन-चार बच्चों के बारी-बारी से नाम लिए। हर बच्चा सामने आता, गोल चक्कर में झुककर घूमता और खुद को बैल की जगह रखकर उसके मन की अभिव्यक्ति करता। किसी ने कहा-हाय राम। कब तक गोल-गोल घूमना पड़ेगा। किसी ने कहा-इससे अच्छा तो मैं गाय होता। कम-से-कम मालिक मेरी सेवा तो करता। किसी ने कहा-काश मेरा मालिक बिजली से चलने वाली मशीन लगा ले। मुझे भी थोड़ा आराम मिल जाए।

बच्चों का अभिनय देखकर और संवाद सुनकर पूरी कक्षा खिलखिलाकर हँस रही थी।

इसी हँसी भरे माहौल का लाभ उठाते हुए मैंने बच्चों को बताया, ''रिमझिम में कोल्हू के बैल के बारे में एक मज़ेदार कविता है। उसे गाएँ?''

बच्चे एक स्वर में बोल उठे, ''हाँ''।

किसी ने तुरंत किताब में से वह पृष्ठ खोल लिया तो किसी ने उसका नाम भी बता दिया-पढ़क्कू की सूझ! इसका मतलब बच्चे पन्ने पलट-पलट कर उस कविता को बहुत पहले ही खोज चुके हैं। मेरा ही नहीं आपका भी यह अनुभव रहा होगा कि प्रत्येक बच्चा नई किताब को हाथ में लेते ही एक-एक करके उसके सारे पन्ने और चित्रों पर खुद-ब-खुद नज़र डाल लेता है।

किसी कविता को सुनने-सुनाने से पहले उसके लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे बच्चे उस कविता के कथ्य और भाव को अधिक अच्छी तरह समझ पाते हैं और उसके द्वारा बेहतर रसानुभूति कर पाते हैं। इससे कक्षा के मानस को कवि के मानस तक पहुँचने में सहायता मिलती है। मैंने बातचीत-अभिनय और चित्रों के द्वारा कविता

हेतु उपयुक्त वातावरण रचने का प्रयास किया। आप किसी खेल, कहानी, फिल्म या कार्टून द्वारा भी यह कार्य कर सकते हैं।

कविता सुनना-सुनाना

इसके बाद मैंने बच्चों को कविता के लिहाज़ से उचित सुर, ताल और लय के साथ कविता गाकर सुनाई। मैं बच्चों को कविता सुनाने से पहले ही मेज़ पर थाप देकर कविता की लय का अभ्यास कर चुका था। इस कारण मुझे बीच में अटकना नहीं पड़ा।

एक बार मैंने बच्चों से कहा, ''मैं कविता की एक-एक पंक्ति गाऊँगा। तुम मेरे बाद उसे दोहराना।''

फिर मैंने कहा, ''कविता की एक पंक्ति मैं गाऊँगा, तुम अगली पंक्ति गाना।''

इसके बाद मैंने कहा, ''कविता की एक पंक्ति तुम गाना, उससे अगली में गाऊँगा।''

फिर मैंने कहा, ''तुम कविता की एक-एक पंक्ति गाओ। मैं तुम्हारे पीछे-पीछे उन्हें दोहराऊँगा।''

बच्चों को बड़ा अच्छा लगता है, जब शिक्षक उनके पीछे-पीछे पंक्तियों को दोहराते हैं। उनमें नए जोश और आत्मविश्वास का संचार होता है।

एक बार मैंने बच्चों को एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्मित रिमझिम ऑडियो सी.डी. में से वह कविता सुनाई। वाद्य यंत्रों के साथ कविता सुनने का अलग ही मज़ा होता है। ऑडियो सी.डी. से कविता सुनकर बच्चे बहुत उत्साहित थे। मैंने कहा, ''चलो, हम अपनी कक्षा की चीज़ों को ही बाजे की तरह इस्तेमाल करके कविता गा लेते हैं।'' इसके बाद मैंने ताली, मेज़ पर थाप, पैरों की ताल, जाँघों पर हथेली की थाप, ज्योमेट्रीय बॉक्स हिलाने से हुई आवाज़ों की ताल पर बच्चों के साथ कविता गाई। बच्चे ताल के साथ मिलकर बहुत अच्छी तरह गा रहे थे।

इसके बाद मैंने बच्चों को समूहों में बाँट दिया और उन्हें अपने-अपने समूह में कविता का एक-एक अंश अपने खास तरीके से तैयार करने को कहा। इस काम के लिए मैंने प्रत्येक समूह को 10 मिनट का समय दिया। मैं प्रत्येक समूह के पास जाकर देख रहा था कि वे किस तरह और क्या तैयारी कर रहे हैं। उनसे बातचीत करके मैं उनके विचारों को स्पष्ट करने में उनकी मदद कर रहा था। तैयारी के बाद प्रत्येक समूह ने अपने अनोखे अंदाज़ में कविता के अंशों को प्रस्तुत किया। यदि कविता छोटी हो तो प्रत्येक समूह को पूरी कविता को प्रस्तुत करने के लिए भी कहा जा सकता है।

बातचीत-स्पष्टीकरण

कविता सुनाने के बाद मैंने बच्चों से कविता के बारे में बातचीत की। बातचीत का कोई पूर्व-निर्धारित मुद्दा या एजेंडा नहीं था। बस बच्चों की प्रतिक्रियाओं के अनुसार बात में से बात निकलती गई। कक्षा में बातचीत करना हिंदी शिक्षण का एक अनिवार्य अंग होता है। बातचीत द्वारा बच्चे अपनी संपूर्ण शब्दावली तथा व्याकरणिक क्षमताओं का सार्थक इस्तेमाल ही नहीं करते बल्कि अपनी बात आत्मविश्वासपूर्वक कहना, धैर्यपूर्वक सुनना, दूसरों की अभिव्यक्ति

का सम्मान करना, अपनी बात के समर्थन में उदाहरण देना, दूसरों की बात को गलत सिद्ध करने के लिए तर्क देना, अपने अनुभव, कल्पनाएँ, योजनाएँ, पसंद-नापसंद, इच्छाएँ आदि बताना जैसे महत्वपूर्ण कार्य करते हैं।

बातचीत द्वारा बच्चों को रचना को आत्मसात करने में सहायता मिलती है और वे उसके अनछुए पहलुओं तक पहुँच पाते हैं। बातचीत द्वारा रचना को बच्चों के दैनिक जीवन और पूर्व अनुभवों से जोड़ा जा सकता है और रचना की (भाषायी) विशेषताओं की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित किया जा सकता है। बातचीत के आधार पर बच्चों को बाद में औपचारिक क्रियाकलापों जैसे प्रश्न-उत्तर, गृहकार्य आदि को करने में भी उल्लेखनीय सहायता मिलती है। बातचीत करते-करते बच्चों को कवि के जीवन, कविता की पृष्ठभूमि, परिवेश आदि के बारे में भी बताया जा सकता है।

मैंने बच्चों से कविता के बारे में जो बातचीत की, उसके कुछ मुख्य बिंदु निम्नलिखित थे -

- पढ़क्कू बड़े तेज़ थे। तेज़ किसे कहेंगे? हमारी कक्षा में कौन-कौन तेज़ हैं? कौन बड़ा तेज़ है? कौन छोटा तेज़ है? क्यों तेज़ है?
- गढ़ना क्या होता है? गढ़ने-बनाने में फर्क, समानता।
- कोल्हू के मालिक को कोल्हू के चलने का पता कैसे चलता था? तुम्हें कौन-कौन से कामों का पता बिना देखे सुनकर/सूँघकर चल जाता है?
- 'कोरी' चीज़ों के नाम-कोरा पन्ना, कोरी दीवार आदि। 'कोरा' का मतलब?
- घंटी की आवाज़ कहाँ-कहाँ से आती है?
- पढ़ने से समझदार बनते हैं या मूर्ख? पढ़क्कू क्या बन गए थे, क्यों? जो पढ़-लिख नहीं पाते? उनमें समझदारी कहाँ से आई?
- बैल भी मोटी-मोटी किताबें पढ़ लेता तो क्या होता?
- मालिक पढ़क्कू पर क्यों हँसा?
- कोल्हू का उपयोग, विकल्प, फ़ायदे, नुकसान।
- पुस्तक में दिए चित्र पर बातचीत, चित्र की बारीकी जैसे-कौन किसे देख रहा है? क्या-क्या नज़र आ रहा है? चित्र के आधार पर सवाल पूछने का खेल जिसमें बच्चे पूछेंगे, शिक्षक बताएगा बच्चों को।
- बातचीत द्वारा कविता में आए नए शब्दों के अर्थ भी समझ आ गए।

रोचक गतिविधियाँ

बातचीत के बाद मैंने कविता को आधार बनाकर अनेक तरह की रोचक गतिविधियाँ अगले कुछ दिनों तक करवाईं। इन गतिविधियों को करने में बच्चों को आनंद तो आया ही, उन्होंने विविध तरीकों से भाषा का सार्थक संदर्भों में इस्तेमाल किया, नई शब्दावली का अभ्यास हुआ और बच्चों की अशाब्दिक अभिव्यक्ति क्षमता का भी विकास हुआ। मैंने ये सभी क्रियाकलाप बच्चों के सुविधाजनक आकार के समूह बनाकर किए। समूह बनाकर कार्य करना शैक्षिक तथा व्यावहारिक दृष्टि से बहुत उपयोग रहता है। छोटे समूह में सभी बच्चों को योगदान करने के अवसर मिलते हैं और वे

एक-दूसरे की सहायता से नई बातें और कौशल भी बिना किसी दबाव के अर्जित कर लेते हैं। एक शिक्षक के दृष्टिकोण से भी देखा जाए तो समूहों का निरीक्षण और उनके कार्य का मूल्यांकन अधिक सुविधाजनक होता है। मैंने जो गतिविधियाँ समूह बनाकर करवाईं, उनमें से कुछ गतिविधियाँ आगे दी गई हैं-

(क) कविता का अभिनय – मैंने प्रत्येक समूह को कोल्हू के मालिक और पढ़क्कू के बीच हुई बातचीत का अभिनय करने के लिए कहा। समूहों ने स्वयं निर्धारित किया कि कौन बच्चा मालिक की भूमिका करेगा और कौन पढ़क्कू की। सबने मिलकर स्वयं संवाद बनाए और प्रस्तुति दी। किसी-किसी समूह में एक बच्चे ने बैल का भी अभिनय किया जो मालिक और पढ़क्कू की बातचीत सुनकर अपने चेहरे से ही बहत कुछ अभिव्यक्त कर रहा था।

(ख) तुलना – मैंने बच्चों को याद दिलाया-यह कविता रामधारी सिंह दिनकर ने लिखी है। इन्हीं की लिखी कविता तुमने पिछली कक्षा में भी पढ़ी थी-मिर्च का मज़ा। उस कविता और इस कविता की तुलना करके निम्नलिखित तालिका भरो -

मैंने यह तालिका बोर्ड पर बना दी ताकि प्रत्येक समूह अपनी कॉपी पर इसे बता सके। प्रत्येक समूह को कक्षा-3 से एक-एक किताब (रिमझिम) मँगाकर दे दी गई ताकि वे दोनों कविताओं की तुलना कर सकें।

(ग) क्रम से – मैंने प्रत्येक समूह को लिखने के लिए कागज़ के चौकोर कार्ड दे दिए। वे कार्ड बच्चों की मदद से पहले से ही तैयार कर लिए गए थे। मैंने बच्चों से कहा-कविता में से अपनी मनपसंद पंक्ति चुन लो और उसे इन कार्डों पर लिख लो। प्रत्येक कार्ड में केवल एक शब्द लिखना है।

इसके बाद मैंने प्रत्येक समूह के कार्ड लेकर उनका क्रम बिगाड़ दिया। प्रत्येक समूह के कार्डों के सैट मैंने मेज़ पर अलग-अलग रख दिए। फिर मैंने एक-एक करके प्रत्येक समूह को बुलाया और उन्हें किसी दूसरे समूह के कार्ड दे दिए। फिर मैंने एक-एक करके प्रत्येक समूह को बुलाया और उन्हें किसी दूसरे

	पढ़क्कू की सूझ	मिर्च का मज़ा
लेखक • कविता के मुख्य पात्र • कविता की सबसे रोचक बात • कविता का वह शब्द जो समझ में नहीं आया • कविता की कुल पंक्तियों की संख्या • सबसे महत्वपूर्ण शब्द		

एक	पढ़क्कू	बड़े	तेज़	थे	तर्कशास्त्र	पढ़ते	थे

समूह के कार्ड दे दिए। जब सबको कार्ड मिल गए, मैंने उन्हें बताया–''तुम्हारे पास जो कार्ड हैं, उनसे कविता की सही पंक्ति बनाइए। जो समूह सबसे पहले सही पंक्ति बना लेगा वह जीत जाएगा।''

सभी समूह क्रम ठीक करने में जुट गए। विजेता समूह के लिए तालियाँ बजवाई गईं। जब सभी समूहों ने अपने-अपने वाक्य बना लिए, तब मैंने पूछा–किस टोली की पंक्ति कविता में सबसे पहले आई थी? उसके बाद किस समूह की पंक्ति आई थी?

इस तरह सभी समूहों ने अपनी-अपनी पंक्तियों को कविता के क्रम में लगा दिया।

(घ) चित्र बनाना – मैंने बच्चों से कविता के बारे में अपने मन से चित्र बनाकर रंग भरने को कहा। मैंने बताया कि वे 'कविता' के बाद या पहले हुई बातों या घटनाओं का चित्र भी बना सकते हैं। चित्र बनाने के बाद बच्चों ने अपने-अपने चित्रों को शीर्षक दिए और कक्षा के प्रदर्शन बोर्ड पर लगा दिए।

(ड़) कहानी – मैंने बच्चों से कहा, ''आज हम पढ़क्कू की कहानी बनाएँगे। हर बच्चा एक-एक वाक्य कहानी में जोड़ता जाएगा''। पहला वाक्य मैंने कहा। अगला वाक्य एक बच्चे ने, उससे अगला वाक्य अगले बच्चे ने कहा और इस तरह कहानी बनती चली गई। जब कहानी पूरी हो गई, मैंने कहा, ''अब सब बच्चे अपनी-अपनी कॉपी में यह कहानी लिख लो।''

(च) कविता संग्रह – बच्चों की अपनी मनपसंद कविताओं का संग्रह करने का काम अनेक तरीकों से करवाया जा सकता है। कुछ तरीके हैं-कविता की कॉपी, कविता-थैली, कविता-बोर्ड, कविता की स्क्रैप बुक आदि। मैंने कक्षा में एक डिब्बा रख दिया और बच्चों से उनकी मनपसंद कविताएँ ढूँढ़ने के लिए कहा। बच्चों ने पाठ्यपुस्तकों, पत्रिकाओं, पुस्तकालय, समाचार पत्रों से कविताएँ एकत्रित कीं। उन्हें बच्चों ने समान आकार के रंगीन कागज़ों पर लिखा और डिब्बे में रख दिया। साल के अंत तक आते-आते डिब्बे में रोचक कविताओं का अच्छा खासा संग्रह तैयार हो गया।

❑❑❑